फ़र्जी क़ब्रे और मज़ार

भाईयो! आजकल ऐसा काफी हो रहा है कि पहले वहॉ कुछ नही था अब बगैर किसी मुर्दे को दफन किए क़ब्र व मजार बना दिया गया और पूछो तो कहते है कि ख्वाब में बशारत हुई है फलां बुजुर्ग ने ख्वाब में हमसे कहा हम यहॉ पर दफन हैं हमारा मजार बनाओ कहीं किसी बुजुर्ग की छड़ी वगैरह या उनके मजार की कोई ईंट ला कर दफन कर दी और मजार बना दिया । सही बात यह है कि इस तरह कब्र वा मजार बनाना और उन पर हाजिरी देना, फातिहा पढ़ना, उर्स करना व चादरें चढ़ाना सब हराम है यह एक तरह से मुसलमानों को धोखा देना और इस्लाम को बदनाम करना है जिन लोगों ने ऐसे मजाराज बना लिए है उनको उखाड़ देना और उनका नाम व निशान खत्म कर देना बहुत जरूरी है। आला हजरत मौलाना अहमद रजा खॉ बरैलवी लिखते हैः

'' फर्जी मजार बनाना और उसके साथ असल का सा मुआमला करना नाजाइज व बिदअत है और ख्वाब की बात खिलाफे शरअ् उमूर में मस्मूअ नही हो सकती ।'' (फतावा रजवीया, जिल्द 4, स0 511 मत्बूआ मुबारकपुर)।

और आजकल बुजुर्ग व वली तो बहुत कम बल्कि न होने के बराबर नजर हा रहे हैं। लेकिन अपने अपने बाप–दादाओं के आलीशान मजारात बनाने और धूम–धूम से उर्स करने की

होड़ सी चल गई है। अल्लाह के महबूब बन्दों की यादगारों को काइम रखने के हम भी काइल हैं लेकिन इन मौजूदा हालात से यह खतरा जरूर लग रहा है कि कहीं आने वाले वक्त में कुछ लोगों का मजहब इस्लाम कही सिर्फ मजार बनाना ही न रह जाए – और किताब '' दर्मियानी उम्मत'' में बढ़ते हुए उर्स व मजार'' के उनवान से बहुत कुछ लिख दिया है। ख्वाहिश मन्द हजरात वहॉ देख लें।

सज्दा करना चूमना और बोसा देना

शरीअते मुहम्मदी में अल्लाह तआला के अलावा किसी को भी सज्दा करना कम अज़ कम हराम जरूर है और सज्दे का मानी व मतलब किसी के सामने माथा टेकना है यह मजहबे इस्लाम में अल्लाह तआला के अलावा किसी के लिए जाइज़ नहीं –उसी का हक है कि बन्दों की पेशानी उसके लिए झुके और जमीन पर रखी जाए –उसी का हक है कि बन्दों की शान नही है कि वह खुदाए तआला के अलावा किसी को सज्दा करे हदीस पाक में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि

अगर मैं अल्लाह तआला के अलावा किसी को किसी के लिए सज्दा करने का हुक्म देता तो औरतों को हुक्म देता कि

वह अपने शैहरो को सज्दा करें। **(तिर्मिजी जिल्द1,स0138 मिश्कात स0 281)**

लिहाजा कभी किसी पीर व फकीर को या उनके मजार को सज्दा नही करना चाहिए यानी उनके सामने माथा जमीन पर नही रखना चाहिए । रहा खास मजार को चूमना और बोसा देना तो यह अगरचे हराम व गुनाह तो नही है लेकिन ज्यादा अच्छा और बेहतर भी नही है उलमाए अहले सुन्नत ने इस से भी मना फरमाया है और उसको चूमने चिमटने लिपटने और बोसा देने को अदब में कमी बताया है ज्यादा अदब और बेहतर और उम्दा तरीका यह है कि कुछ दूर खड़े हो कर फातिहा पढ़े और अल्लाह तआला से दुआ मांगे और चला आए।

भाईओ! अल्लाह वालों के मजारात को चूमने उसको बोसा देने और उन से चिमटने लिपटने से ज्यादा जरूरी इन बातों को मानना है जो उन्हों ने तालीम दी—और जो लोग उनकी बातों पर अमल करते है उनको फैज व नफअ ज्यादा मिलता है छूने चिमटने और चूमने वालों को बहुत कम मिलता है और सज्दे करने वाले को कुछ नहीं मिलता बल्कि उन पर अजाब व गुनाह होता है और उन से अल्लाह भी नाराज है और अल्लाह वाले भी।

चदर .चढ़ाने का मसला

अल्लाह के महबूब बन्दों के मजारात पर चादर चढ़ाना जाइज है जो इसे गलत कहते हैं वह खुद गलत हैं लेकिन उलमा–ए–अहले सुन्नत ने फरमाया कि जब मजार पर चादर चढ़ी हुई

हो – और वह भी खराब बोसीदा और पुरानी न हुई हो तो उसके ऊपर दूसरी चादर न चढ़ाई जाए –या फट जाए तो उस को हटा कर या उसके ऊपर दूसरी चादर डाल देने में कोई हरज नहीं –हॉ अगर यह पता हो कि वह जाइद चादरें गरीबों मिस्कीनों और मुहताजों परेशान हाल जरूरतमन्दों के काम में आती हैं तो चादर डालने में भी कोई हरज नही बल्कि यह भी एक तरह की खैरात और सदका है और यह मालूम है कि यहॉ की चादरें उन सज्जादा नशीनों और मुजाविरों के काम आती है जो सब मालदार दौलतमन्द हैं तो ऐसे मजारों पर चादरें चढाना मालदारों को और मालदार बनाना है ऐसी जगह चादर चढ़ाना हो या उसकी मन्नत मान ली हो तो वहॉ चादर चढ़ाने के बजाए उसकी कीमत का कपड़ा किसी जरूरतमन्द को बना दे या किसी मरीज का इलाज करा दे या मस्जिद मदरसे इमाम या मुअज्जिन को दे दे किसी यतीम बच्चे बेघर आदमी का मकान बनवा दे या मकान बनवाने में उसकी मदद करे और सबका सवाब उन बुर्जुग की रूह को ईसाल कर दे –या दिल में इरादह कर लेने से भी पहोंच जाता है – मुॅह से कहना कुछ जरूरी नही। (अहकामे शरीअत

मुसन्नेफा आला हजरत बरैलवी, हिस्सा अव्वल, 72 शरह सहीह मुस्लिम मौलाना गुलाम रसूल सईदी,जिल्द 2, स0 816।

बुजुर्गो के फोटो और उनकी तस्वीरें

किसी भी जानदार का फोटो और तसवीर खींचना खिंचवाना या साथ इज्जत के उसको घर में रखना हराम है और बुजुर्गो की तसवीरें और उनके फोटो रखना और भी ज्यादा गुनाह है क्योंकि इस तरह बुत परस्ती का दरवाजा खुलता है पीरों, वलियों, बुजुर्गों की तसवीरों के सामने सज्दे करना उन पर मालाएं डालना अगर बत्तिया सुलगाना उन्हे चुमना मुसलमानो का काम नही है बल्कि यह काफिरों गैर मुस्लिमों बुत परस्तों का काम है अफसोस आज कालिमा पढने वाले एक अल्लाह की तौहीद व इबादत का डंका बजाने वाले मुसलमान अंधे हुए चले जा रहे है खुले आम उर्सो औंर मेलों में अल्लाह वालों का फोटो खरीदे और बेचे जा रहे है उन्हे घरों में सजा कर उनके सामने सज्दे हो रहे हैं ओर उन पर मालायें डाली जा रही है अगरबत्तियॉ और मोम बत्तिया सुलागाई और जलाई जा रही है और यह सब बुजुर्गो की मुहब्बत व अकीदत में हो रहा है। मुहब्बत दुशमनी और अकीदत गुमराही व जलालत बन गई है।

दरअसल बात यह है कि शैतान चाहता है तुम्हें बुजुर्गो की मुहब्बत का झांसा देकर और इसका चारा डाल कर तुम से

कुफ्र कराए और तुम्हें बुत परस्त बनाए और मंदिरों मुरूद्वारों,पूजा स्थलों मे जो होता है वह काम तुम वैसे तो नही करते पर तुम से इस तरह करवाए और खुद भी जहत्रम में जाए और तुम को भी ले जाए।

भाईया! इस्लाम में नेक बन्दों की तसवीरें और फोटो रखना उनकी ताजीम करना होता तो सबसे पहले उस पैगम्बरे आजम का होता तो सबसे पहले उस पैगम्बरे आजम महबूबे परवरदिगार की तसवीर होती जिसका नाम कलिमा में है और हर मुसलमान के सीने दिल और माथे पर लगी होती।

इंसान को शौतान को कभी बुजुर्गाने दीन की शान में गुस्ताख और बेअदब पा कर गुमराह करता है और कभी उनकी मुहब्बत में हद से आगें गढा कर उसके हर दावों से होशियार रहना चाािहिए।

अफसोस इस्लाम जिन बातों को मिटाने के लिए आया था आज मुसलमानों ने ही वह काम शुरू कर दिए हदीस में है कि रसूले पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम नें जब खाना काबा को बुतों से पाक फरमाया और उन्हे अपनी छडी मुबारक से तोड तोड कर गिराया बाद में हजरत सैयदना दब्राहीम खलीलुल्लाह अलैहिस्सलाम और हजरत इस्माईल अलैहिस्लाम की तसवीरे एक दीवार पर बनी हुई मुलाहिजा फरमाई तो सरकार ने उन तसवीरों को खान ए काबा से बाहर निकलवा

दिया। (**सहीह बुखारी जिल्द 1 किताबुल–मनासिक स0 218, अबू दाऊद, जिल्द 1, किताबुल मानसिक स0 27)।**

यह हदीस आला हजरत इमाम अहमद रजा बरैलवी ने तफावा रजवीया जदीद, जिल्द 24स0 577 पर नक्ल फरमाई है। इसके अलावा हदीसों में है कि पिछली उम्मतों में बुत परस्ती की इब्तिदा ऐसे ही हुई कि कौम के मुअज्जज और बुजुर्गों की तसवीरे और मुजस्समें बना कर नसब कर दिए गये यह यादगार बाकी रखने के लिए हुआ लेकिन बाद में उनकी ताजीम और एहतराम होंने लगा फिर धीरे–धीरे वही माबूद हो गये । (**मिर्कात शरह मिश्कात, जिल्द 8, स0 282, किताबुल्लिबास, बाबुत्तसवीर)**

आजकल कुछ पीर अपनी तसवीरे बनवाते है फिर उन्ही मुरीदों के हाथ बेचते या उन्हे बाटते है ऐसे लोग गुमराह हैं। ऐसे पीरों ओर उनके मुरीदों को जहत्रम के अजाब से डरना चाहिए। शेअर–

बुत परस्ती दीने अहमद में कहीं आई नही
इसलिए तसवीर जाना हमने खिंचावाई नही

मजारात पर हाजिरी देने वालों के लिए कुछ और मशवरे

अगर किसी खानकाह में या मजार शरीफ के आस पास कोई खिलाफे शरअ काम होता हो उसमें हरगिज शरीक न हों

मसलन नाच, तमाशे, मजामीर के साथ कव्वाालियॉ फोटो ग्राफियॉ वगैंरह। आजकल जो कव्वालियॉ राइज हैं यह भी खिलाफे शरअ हैं उनमें मजामीर हैं कव्वाल आम तौर से फासिक व फाजिर बेनमाजी होते हैं ऐसों की सोहबत में कोई भलाई नही। महबूबे इलाही हजरत ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया देहलवी फरमाते हैं मन मना करदह अभ कि मजामीर व मुहरेमात दर्मियान नबाशह। मैनें मना किया है कि मजामीर व मुहरेमात दर्मियान नबाशद । मैने मना किया है कि मजामीर और हराम चीजें मज्लिस में नही होना चाहिए।

(फवाइदुल–फवाइद, हिस्सा :3, मज्लिस 5, मत्बूआ उर्दू अकादमी,(दिल्ली) कव्वाली के मसले को और इसके अलावा दूसरी कुछ खिलाफे शरअ बातों को तफ्सील से जानने के लिए किताब **(गलतफहमियॉ और उनकी इस्लाह) और (दर्मियानी उम्मत)** का मुताला करना चाहिए औरतों को मजारात पर लेकर न जांए उलमा–ए–अहले सुन्नत ने इससे मना फरमाया है।

हाथों के डोरे और कड़े

किसी भी धात का कोई कड़ा पहनना मर्द के लिए नाजाइज व गुनाह है। ऐसे ही हाथों में लाल पीले डोरे बाधने का रिवाज गैर मुस्लिमों में था उनके तीर्थ में डोरे बांध देते हैं अब

मुसलमानों में मजारात के मुजाविरों ने भी कुछ दिनों से यह सब करना शुरू कर दिया है हालांकि मुसलमानों को चाहिए कि वह गैर मुस्लिमों की नक्ल करने और उनकी मुशाबेहत से दूर रहें और लाल डोरा या तावीज अगर गले में डाल दिया जाए तो जाइज है इसमें काफिरों की मुशाबेहत और नक्ल है लेकिन हाथ के डोरे की इजाजत नहीं।

रजिस्ट्रों में नाम लिखाना और वकील बनाना

किसी बुजुर्ग के मजार पर हाजिरी देने या फातिहा पढ़ने फूल डालने या चादर चढ़ाने के लिए किसी मुजाविर को वकील बनाना या उनके रजिस्ट्रों में नाम लिखाना जरूरी नहीं है बल्कि मौजूदा दौर के अक्सर मुजाविरों और सज्जादा नशीनों की वकालत के बगैर खुद ही हाजिरी देने में ज्यादा फजीलत है और जहॉ तक नाम लिखाने की जरूरत नहीं। उनका नाम तो ख्याल रहे कि मसाजिद व मजारात पर आने वालों को इन दुनियवी कागज के रजिस्ट्रों में नाम लिखाने की जरूरत नही । यह जो मुजाविर लोग फीस लेकर नाम रजिस्ट्रों में लिखते हैं। यह सब आज कल ज्यादा तर कमाई के धन्धे हैं और एक तरह की लूट खसोट है।

अब्दुर्रहीम खान क़ादरी मुक़ाम व पोस्ट जमदा शाही जिला बस्ती यू पी 272002
खतीब व इमाम जाम मस्जिद दमुआ जिला छिन्दवाड़ा मध्य प्रदेश 480555
7415235497 9303046736 8225958652 7275912387
m.khan42@rocketmail.com
khanjamdashahi@gail.com
khanamakhtarjahan@gmail.com
jamamasjiddamua@gmail.com